पंजाब घराने का तबला वादन के क्षेत्र में योगदान

आशीष चौहान
रिसर्च स्कालर,
संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
ईमेलः ashishchauhan061192@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

आशीष चौहान

पंजाब घराने का तबला वादन के क्षेत्र में योगदान

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. I, Article No. 15 pp. 087-093

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-1-jan-june-2021/

सारांश

भारतीय संगीत में 'घराना' शब्द विशिष्ट गुरू–शिष्य परम्परा को दर्शाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख विशेषता यह है कि, इसे सीखने के लिए शिष्य को गुरू के सम्मुख बैठना पड़ता है। आज भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचार–प्रसार जितना भी हुआ है, यह सब 'गुरू–शिष्य परम्परा' के नतीज़े हैं। घराना का संबंध संगीत की प्रत्येक विधा से है, चाहे वह गायन–वादन हो या नृत्य। पंजाब घराने की उत्पति स्वतंत्र रूप से हुई है। इस घराने का वादन अधिकतर पखावज शैली पर आधारित है। आज भी पंजाब में कई स्थानों पर बांए तबले पर पखावज के समान आटा लगाने की परम्परा को देखा जा सकता है। पंजाब घराने के वादन में पखावज अंग देखने को मिलता है, जिसे तबले पर बड़ी कुशलता से बजाया जाता है। पंजाब घराने के विशय में बनारस घराने के विद्वान तबला वादक पं. किशन महाराज जी कहते हैं, कि सिद्धार खां के पौत्र उ0 मोदू खां की शादी पंजाब के किसी तबला वादक की लड़की से हुई थी, जिसमें 500 पंजाबी गतें मोदू खां को दहेज में दी गई थी। इससे स्पष्ट होता है कि पंजाब में तबला काफी प्राचीन काल से था और आज भी भारत के समस्त तबला घराने पंजाबी गतों को तबले का एक प्रमुख अंग मानते है। मिंया कादिर बख़्श (द्वितीय) को मिंया फकीर बख़्श के बाद पंजाब घराने का प्रचार–प्रसार का श्रेय दिया जाता है। इनके प्रमुख शिष्यों में लाल मुहम्मद खां, महाराज टीकमगढ़, भाई नसीरा, शौकत हुसैन, सादिक हुसैन, रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह, अल्लाधेत्ता खां, उ0 लक्ष्मण सिंह सीन व उ0 अल्ला रखा खां आदि प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में उ0 अल्ला रखा खां के पुत्र व शिष्य उ0 ज़ाकिर हुसैन तबला जगत के सुप्रसिद्ध महान कलाकार हैं। इन्होंने पूरी दुनिया में पंजाब घराने की वादन शैली को फैलाया है।

आशीष चौहान

प्रस्तावना

घराना

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में जहां विशिष्ट 'गुरू–शिष्य परम्परा' को 'घराना' की संज्ञा दी गई है, वहीं दक्षिणी या कर्नाटकी संगीत पद्धति में इसे 'सम्प्रदाय' कहा जाता है। 'संगीत रत्नाकर' में संगीत के अर्थ में पं. शाङ्‌र्गदेव ने इसको 'सुसंप्रदाय' कह कर संबोधित किया है यथा–

'सुसम्प्रदायो गीतज्ञैर्गीयते गायनाग्रणे'[1]

उपर्युक्त सुसम्प्रदाय का अर्थ 'उत्तम गुरू' परम्परा से प्राप्त शिक्षा से है। प्राचीन समय में इसे इन सभी संज्ञाओं से पुकारा गया है, जो आज संगीत के 'घराने' शब्द में परिवर्तित हो गई है।

घराना या सम्प्रदाय गुरू–शिष्य के सहयोग से बनता है। प्राचीन समय में वंश परम्परागत व्यवसाय में पारंगत तथा वंशानुगत कला में निपुण होने के कारण घराने तथा शैली का संबंध होना स्वभाविक ही था। अतः 'घराना' संगीत में विशिष्ट शैली के ज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। प्रत्येक घराने के गुरू में अपनी–अपनी विशेषताएं होती हैं और उस गुरू–शिष्य परम्परा से जुड़े शिष्य का यह धर्म हो जाता है, कि इन विशिष्टताओं को आत्मसात् करें।घरानों को चलाने का श्रेय गुरू को जाता है, उतना ही शिष्यों के अनुकरण को भी जाता है। शिष्यों ने गुरू द्वारा सीखी गई विधा को संजोकर आत्मसात् किया और गुरू आज्ञा से ही इसे आगे भी बांटा। घराना पद्धति द्वारा ही आज भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान हम तक पहुंचा है, जो कि आज देश ही नहीं, विदेशों में भी अपनी विशिष्टता का प्रमाण दे रहा है।

घरानों का विकास कब हुआ व कैसे हुआ? इसके संदर्भ में श्री भगवत शरण शर्मा की पुस्तक में उल्लिखित है कि, '8वीं से 12वीं शताब्दी के कलाकार अपने संगीत ज्ञान को इतना छुपा कर रखते थे, कि वे किसी अन्य जाति वालों को तो क्या, अपनी ही जाति वालों को बताने में संकोच करते थे। यह संकीर्णता यहां तक बढ़ी कि वह संगीत के ग्रंथ भी नहीं लिखते थे। उनका संगीत पीढ़ी दर पीढ़ी चला करता था। इस संकीर्ण मनोवृति के फलस्वरूप संगीत के क्षेत्र में 'घरानों' की नींव पड़ी।'[2]

घराने की पृष्ठभूमि

अधिकतर विद्वानों के मतानुसार संगीत में घरानों की उत्पति मुग़ल काल से मानी जाती है। भारत में मुग़ल शासन होने के कारण इसका प्रभाव यहां के हिन्दू संगीतज्ञों पर भी पड़ा। जिसके कारण संस्कृति के 'गृह' शब्द से 'घराना' शब्द की उत्पति हुई। उन दिनों गायकों, वादकों व नृत्यकारों का कला–आश्रय राजदरबार ही रहे। कुछ राजाओं द्वारा कलाकारों के संरक्षण से घरानों का विकास माना जाता है। राजाश्रय में रह कर संगीतकार घराना पद्धति में रह कर शिक्षा देने लगे। जिसके कारण संगीत की भारत में हर विधा गायन, वादन व नृत्य के घरानों की नींव पड़ी और धीरे–धीरे इसका प्रचार–प्रसार हुआ। इन घरानों का विकसित रूप आज हमारे सामने है। घराना वंश परम्परा अनुसार वर्तमान में 'तबला घराना' के कुल छः घराने प्रसिद्ध हैं–

1. दिल्ली घराना
2. अजराड़ा घराना

3. लखनऊ घराना
4. फर्रूखाबाद घराना
5. बनारस घराना
6. पंजाब घराना

तबला जगत में इन सभी घरानों की अपनी—अपनी विशेष भूमिका है। यह सभी घराने अपनी विशेष परम्परा, शैली, वादन के तरीकों के लिए जाने जाते हैं। प्रत्येक घराने की अपनी एक विशिष्टता है, जो कि वादन के क्षेत्र को एक नए मुकाम तक पहुंचाते हैं।

पंजाब घराना व इसकी परम्परा

पखावज वादक श्री भवानी दास का नाम भारतीय संगीत जगत में बड़े अदब से लिया जाता है। पंजाब घराने की उत्त्पति श्री भवानी दास व इनकी शिष्य परम्परा द्वारा ही मानी जाती है, वैसे तो भवानी दास मूलतः ब्रज निवासी थे। लाहौर के सूबेदार के निमंत्रण पर वह पंजाब आकर यहीं बस गए थे। श्री भवानी दास के शिष्यों में कादिर बख्श, हद्दू खां, ताज खां डेरेदार, अमीर अली व एक शिष्य का नाम अज्ञात है।

श्री भवानी दास जहां पखावज वादन में कुशल थे, वहीं उन्होंने पंजाब में 'दुक्कड़' वादन का भी विकास किया। श्री भवानी दास के प्रथम षिश्य मिंया कादिर बख़्श (प्रथम) से शिष्य परम्परा में उनके पुत्र मिंया हुसैन बख़्श, पौत्र फकीर बख़्श एवं शिष्य भाई बाग हुए। फकीर बख्श के पुत्र कादिर बख़्श तथा शिष्य परम्परा में करम इलाही, मिंया मलंग, मीरा बख़्श घिलवालिये, बहादुर सिंह हुए। कादिर बख़्श के शिष्या में उस्ताद लक्ष्मण सिंह सीन, उस्ताद अल्ला रखा खां आदि शामिल हैं। मिंया कादिर बख़्श (प्रथम) की शिष्य परम्परा आज़ादी के बाद पाकिस्तान में अधिकतर फैली।

श्री भवानी दास के दूसरे शिष्य हद्दू खां (लाहौर) की शिष्य परम्परा मुख्यतः पाकिस्तान में फैली है, ऐसा माना जाता है। कुछ विद्वान पं. बलदेव सहाय (बनारस) को इनके शिष्य मानते हैं। श्री भवानी दास के तीसरे शिष्य ताज खां डेरेदार की शिष्य परम्पराओं में उनके पुत्र नासिर खां, पखावजी हुए। यह अपने समय के कुशल पखावजी थे। उ0 नासिर खां बड़ौदरा (गुजरात) में दरबारी कलाकार रहे हैं, जिस कारण इनकी विशाल शिष्य परम्परा गुजरात में फैली। श्री भवानी दास के चौथे शिष्य अमीर अली व पांचवें शिष्य का नाम अज्ञात है। इन्होंने भी गुरू—शिष्य परम्परा द्वारा पंजाब घराने की नींव रखी।

पंजाब घराने में तबला वाद्य को समृद्ध व इसके प्रचार—प्रसार का श्रेय उ0 कादिर बख़्श प्रथम के पौत्र मिंया फकीर बख़्श तथा प्रपौत्र मिंया कादिर बख़्ष (द्वितीय) को जाता है। उ0 फकीर बख़्श जहां पखावज के महान कलाकार थे, वहीं अधिकतर विद्वान इन्हें ही सर्वप्रथम पखावज के बोलों को तबले पर उतारने का श्रेय देते हैं। कहा जाता है कि इनके सवा लाख शिष्य हुए, यद्यपि यह बात कुछ ठीक प्रतीत नहीं होती है, मगर इस बात से यह स्पश्ट हो जाता है कि उ0 फकीर बख़्श ने तबले का काफी प्रचार—प्रसार किया।

मिंया फकीर बख़्श के प्रमुख शिष्यों में प्रथम शिष्य मिंया करम इलाही हुए। उ0 फकीर बख़्श के पुत्र कादिर बख़्श द्वितीय ने पिता के अलावा मिंया करम इलाही से भी शिक्षा प्राप्त की। करम इलाही

के अनेक शिष्य हुए, जो हिंदुस्तान व पाकिस्तान दोनों देशों में फैले हैं। इनके भारतीय शिष्यों में मिंया नवी बख़्श कालरिये, बनारस के वासुदेव प्रसाद, लुधियाना के बहादुर सिंह आदि प्रमुख हैं।

मिंया फकीर बख़्श के प्रमुख शिष्यों में दूसरे शिष्य बाबा मलंग (सन् 1870 से सन् 1940–45 के बीच) हुए। बाबा मलंग के सैंकड़ों शिष्य हुए, जिनमें शौकत हुसैन, इनायत अली, तालब हुसैन, अयोध्या प्रसाद (रावलपिंडी) पाकिस्तान के नामी तबला वादक हैं। फकीर बख़्श के शिष्यों में मीरा बख़्श, फकीर बख़्श फत्तेहउल्ला हुए, इनके शिष्य बहादुर सिंह हुए। वर्तमान में बहादुर सिंह के शिष्य परम्परा लुधियाना, जालंधर, पटियाला, अमृतसर आदि में फैली है।

मिंया कादिर बख़्श (द्वितीय) को मिंया फकीर बख्श के बाद पंजाब घराने का प्रचार–प्रसार का श्रेय दिया जाता है। मिंया कादिर बख़्श पखावज व तबला दोनों में कुशल थे। इनके प्रमुख शिष्यों में लाल मुहम्मद खां, महाराज टीकमगढ़, भाई नसीरा, शौकत हुसैन, सादिक हुसैन, रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह, अल्लाधेत्ता खां, उ0 लक्ष्मण सिंह सीन व उ0 अल्ला रखा खां आदि प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में उ0 अल्ला रखा खां के पुत्र व शिष्य उ0 ज़ाकिर हुसैन तबला जगत के सुप्रसिद्ध महान कलाकार हैं। इन्होंने पूरी दुनिया में पंजाब घराने की वादन शैली को फैलाया है। संगीत जगत में इनका नाम बडे सम्मान से लिया जाता है। इसके अलावा उ0 शौकत हुसैन (पाकिस्तान) के शिष्य उ0 तारिक खां साहब ने भी संगीत जगत में अपने वादन से पंजाब घराने का खूब प्रचार–प्रसार किया है।

मिंया कादिर बख़्श के प्रमुख शिष्यों में उ0 लक्ष्मण सिंह सीन का नाम सुप्रसिद्ध है। इनके शिष्यों में श्री पवन कुमार वर्मा, श्री कश्मीरी लाल, श्री काले राम, श्री जगमोहन शर्मा आदि शामिल हैं।

पंजाब घराने की वादन शैली व विशेषताएं

पंजाब में तबला वादन शैली का निर्माण व विकास स्वतंत्र रूप से माना जाता है। यहां के उ0 फकीर बख़्श ने पखावज में बजने वाले खुले व ज़ोरदार बोलों को बंद करके तबले पर वादन क्रिया की एक पृथक शैली का निर्माण किया।

इस घराने में पखावज के बोलों का प्रभुत्व देखने को मिलता है। इस घराने की वादन शैली में यहां की भाषा का असर देखा जा सकता है, जैसे–'धिर धिरकिट' के स्थान पर 'धेर धेरकिट' का प्रयोग स्थानीय भाषा का सूचक है। इस प्रकार पंजाब घराने की वादन शैली में पखावज के खुले व ज़ोरदार बोलों का असर दिखाई देता है।

वादन में बांए तबले पर मींड़ का प्रयोग इस घराने की विशेषता है। इनकी वादन शैली में कायदे का प्रसार जटिल व लयकारी युक्त होता है, इसलिए यह बजाने में मुश्किल होते हैं। इस शैली को गुरूओं के समक्ष बैठ कर ही सीखा जा सकता है। इस घराने के कायदे अन्य घरानों की तुलना में काफी लम्बे होते हैं, जिनको विस्तार रूप से बजाया जाता है। यह घराना गतों व रेलों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। लम्बी–लम्बी गतों तथा अनेकों प्रकार की लयकारियों द्वारा वादन किया जाता है। जिसमें धिनाड़, कृतन्न, धाड़ागेन आदि बोलों का समावेश सुना जा सकता है। पंजाब घराने के वादन की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि इसमें प्रत्येक ताल को तीन ताल की भांति ही विस्तार रूप में सीखाया व बजाया जाता है। पंजाब घराने के कुछ कायदे, गतें इस प्रकार हैं–

कायदा (चतुस्त्र जाति)
तीनताल

धात्रकधि	किटधाड़	धागेनधा	गधातिंऽ
x			
धागेनति	नगधेत	धागेनति	नानाकेना
2			
तात्रकति	किटताड़	तागेनता	केनातिंऽ
0			
धागेनति	नगधेत	धागेनति	नानाकेना
3			

पेशकार अंग का कायदा
तीनताल

(1)

धिंता	क्ड़धिं	ताऽक्ड	धिंधिं
x			
धाऽग	धाधा	तूना	किटतक
2			
तिंता	क्ड़तिं	ताऽक्ड़	तिंति
0			
धाऽग	धाधा	तूना	किटतक
3			

(2)

धात्रकधि	किटधाड़	धागेनधा	गधातिंऽ
x			
धागेनति	नगधेत	धागेनति	नानाकेन
2			
तात्रकति	किटताड़	तागेनता	केनातिंऽ
0			
धागेनति	नगधेत	धागेनति	नानाकेन
3			

पंजाबी गत

धिनाऽ x	धाऽऽड़	धिनाऽ	धाऽऽड़
धागेन 2	गधिन	धागेन	गधिन
तकिट 0	धाऽऽड़	तकिट	धाऽऽड़
तकधिन 3	नतक	तकधिं	नतक
तकत x	कतिन	तिनत	कतक
तेटेते 2	टकत	कतग	दगिन
घेघेदिं 0	ऽदिंऽ	घेघेदिं	ऽदिंऽ
धेऽतिरकिट 3	तकतेत्	धेऽतिरकिट	तकतेत्

धा
x

टुकड़ा (तीनताल)

धिरधिरकिटतक x	तेत्ऽऽऽधिरधिर	किटतकतेत्ऽऽऽ	धिरधिरकिटतक
धिरधिरकिटतक 2	तक्ड़धाऽ	धिरधिरकिटतक	तक्ड़धाऽ
ऽतिऽऽ 0	धाऽऽऽधिरधिर	किटतकतक्ड़	धाऽतिऽ
ऽधाऽऽ 3	धिरधिरकिटतक	तक्ड़धाऽ	ऽतिऽऽ

धा
x

टुकड़ा (तीनताल)

धिटतिट x	तागेतिट	कृधेतिट	नाऽकिटतकदिंऽ
ऽधातिंना 2	कतऽताऽ	धिरधिरकिटतक	तेत्ऽधिरधिर
किटतकतक्ड़ 0	धाऽधिरधिर	किटतकतेत्ऽ	धिरधिरकिटतक
तक्ड़धाऽ 3	धिरधिरकिटतक	तेत्ऽधिरधिर	किटतकतक्ड़

धा
X

संदर्भ ग्रंथ

[1,2] सक्सेना डॉ. वसुधा, ताल के लक्ष्य–लक्षण स्वरूप में एकरूपता, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002

बंसल, परमानन्द एवं चन्द, ज्ञान (2009) संगीत सागरिका, प्रासंगिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स रोहणी नई दिल्ली।

चिश्ती डॉ. एस.आर., तबला संचयन, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002

मिस्त्री डॉ. आबान ई.,पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएं, स्वर साधना समित्ति ज़र एनेक्स, जुम्बलवाड़ी, मुम्बई–400002